P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन

**मुरारी सिंह यादव**
शोध छात्र,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
हे0 न0 ब0 ग0 विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल

**एस० के० लखेडा**
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
हे0 न0 ब0 ग0 विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल

**सारांश**

व्यावसायिक आकांक्षा से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा भविष्य में चुने जाने वाले व्यवसायों के प्रति उनके रूझान से है। वर्तमान शैक्षिक प्रणाली पर गम्भीरता से विचार करें तो यह देखा जा सकता है कि आज विद्यार्थियों को रोजगार परक एवं आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम करने के लिए उनकी व्यावसायिक आकांक्षाओं के अनुसार उचित मार्गदर्शन, निर्देशन तथा समावेशन की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। आंकड़ों के एकत्रिकरण के लिए डा0 सरिता आनन्द द्वारा निर्मित उपकरण व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया तथा आंकडो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग एवं विषय वर्ग का प्रभाव नहीं पड़ता है। छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है एवं कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नहीं है।

**मुख्य शब्द :** व्यावसायिक आकांक्षा।

**प्रस्तावना**

प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति उसके प्राकृतिक संसाधनों के साथ–साथ उसके मानवीय ससांधनों पर भी निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों से तात्पर्य सुयोग्य तथा शिक्षित नागरिकों के राष्ट्र की प्रगति में योगदान पर निर्भर करती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि नागरिकों को उचित व विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। शिक्षा प्रणाली की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसके माध्यम से कितनी कुशल व उन्नत मानव पूँजी का निर्माण हुआ है।

वर्तमान युग व्यावसायिक जागरुकता का युग है। समाज एवं विद्यालय का समग्र वातावरण इस प्रकार का नहीं है, कि विद्यार्थी पढ़ाई के साथ–साथ अपने व्यवसाय की प्राप्ति के सम्बन्ध में अपनी आकांक्षाओं को निर्धारित कर सके। बच्चे को क्या बनाना है यह उनके माता–पिता बचपन में तय कर लेते हैं और इसी आधार पर अपने बच्चों को विद्यालय पढ़ने भेजते हैं। विद्यार्थियों के लिए व्यवसाय का चयन करना काफी कठिन होता है क्योंकि किशोरावस्था में व्यवसाय के चयन के सम्बन्ध में सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में ऊर्जा को सही दिशा नहीं मिल पाती है जिसका उनके व्यक्तित्व के साथ–साथ उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी नकारात्मक प्रभाव पडता है। हमारे देश में विद्यार्थी माध्यमिक स्तर के बाद से ही विभिन्न व्यवसायों में जाना प्रारंभ करते हैं ऐसे में यह स्तर काफी महत्वपर्ण हो जाता है।

देश की शिक्षा व्यवस्था की व्यवहारिक कमी यह है कि विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों के चयन के लिए किसी भी प्रकार का परामर्श और प्रोत्साहन नहीं मिलता है। समाज एवं विद्यालय में भी विद्यार्थियों को अपनी योग्यताओं व रुचियों को पहचानने व विकसित करने का अवसर प्रदान नहीं करते ताकि विद्यार्थी कार्य–प्रवृत्तियों, कार्य कौशल व कार्य–मूल्य को विकसित कर सकें और न केवल व्यवसाय के सम्बन्ध में अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्णय लेने, सामजंस्य बना पाने व समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्राप्त कर सकगें।

**साहित्यावलोकन**

कुमार, आर० (2017) ने अपने अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का उनके लिंग के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन में पाया की महिला विद्यार्थियों का मध्यमान पुरुष विद्यार्थियो की तुलना में अधिक है। महिला विद्यार्थी साहित्य, कला, सामाजिक, वाणिज्य, रचनात्मक व घरेलु कार्य क्षेत्र में रूचि रखते हैं. जबकि पुरुष विद्यार्थी वैज्ञानिक, कृषि व प्रशासनिक क्षेत्र में महिला विद्यार्थियों से अधिक रूचि रखते हैं।

कौर, जी० (2015) ने विद्यार्थियों में व्यावसायिक परिपक्वता का पारिवारिक वातावरण के सम्बन्ध में अध्ययन में पाया कि महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है। सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक परिपक्वता में अंतर है। विद्यार्थियों में व्यावसायिक परिपक्वता का पारिवारिक वातावरण के बीच सम्बन्ध होता है।

पटनायक, एम. बी. (2015) ने अपने अध्ययन जंगल महल के विद्यालय में पढ़ने वाले किशोरों में लिंग, शैक्षिक प्रदर्शन व जनसंख्यात्मक कारकों का व्यवसायिक आकांक्षा से सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि:–

1. बालक एवं बालिकाओं में व्यवसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विभिन्न बुद्धि स्तर के छात्रों में व्यवसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर है।
3. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर है।

बाकलीवाल, एम. (2011) ने अपने अध्ययन माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा व उनके माता–पिता की तत्सम्बन्धी आकांक्षा तथा व्यावसायिक आकाक्षा पुनर्निर्धारण का अध्ययन किया और पाया कि–

1. ग्रामीण व औद्योगिक परिवेश के माता, पिता और छात्रा तीनों में व्यावसायिक आकांक्षाओं की समानता व भिन्नता लगभग समान पायी गई जबकि व्यापारिक व शासकीय परिवेश में छात्रा की माता से भिन्न एवं पिता की आकांक्षाए बिल्कुल समान पायी गई।
2. माता–पिता के बढ़ते शिक्षा स्तर के साथ–साथ छात्राओं के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में वृद्धि पायी गई।

भारद्वाज (2011), द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, व्यवसायिक चुनाव तथा अधिगम शैली पर किये गये अध्ययन में पाया कि नगरीय छात्रों, परम्परागत शिक्षण संस्थाओं तथा सामान्य वर्ग की छात्राओं की व्यवसायिक चुनाव के प्रति अभिवृत्ति अधिक पायी गयी और वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की व्यवसायिक चयन की अभिवृति कला वर्ग से अधिक पायी गयी।

**समस्या कथन**

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन''।

**संक्रियात्मक परिभाषा**

**व्यावसायिक आकांक्षा**

व्यावसायिक आकांक्षा विद्यार्थियों द्वारा भविष्य में व्यवसाय चयन की इच्छा है। प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक आकांक्षा से तात्पर्य डा0 सरिता आनन्द द्वारा निर्मित उपकरण व्यावसायिक आकांक्षा मापनी द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों से है।

**माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों**

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी से हमारा तात्पर्य राजकीय इण्टर कालेज में अध्ययनरत कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों से है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

1. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ**

1. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**परिसीमायें**

अध्ययन उत्तराखण्ड के पौड़ी जनपद के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं तक सीमित रखा गया है। जिसमें विद्यार्थियों की सिर्फ व्यावसायिक आकांक्षा के अध्ययन तक सीमित रखा गया है।

**अनुसंधान विधि**

अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुये शोधार्थी द्वारा वर्तमान अध्ययन में 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार उक्त अध्ययन में विद्यार्थियों व्यावसायिक आकांक्षा का विश्लेषण लिंग एवं विषय वर्ग के आधार पर किया गया।

उक्त आंकड़ों के संकलन हेतु– डा0 सरिता आनन्द द्वारा निर्मित उपकरण व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया ।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत अध्ययन हेतु विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया। न्यादर्श हेतु पौड़ी जनपद (उत्तराखण्ड) के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।

**सांख्यिकीय प्रविधियाँ**

प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए प्रदत्तों के अनुकूल सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है। इस अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. प्रमाणिक त्रुटि
4. क्रान्तिक अनुपात।

**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

**उद्देश्य–1**

छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना –1**

छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**तालिकाः 1**

**छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन**

| समूह | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | स्वतंत्रता के अंश (df) | क्रान्तिक अनुपात | सार्थकता मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 50 | 112.74 | 11.482 | 98 | –.294 | .770 | सार्थक नहीं |
| छात्रायें | 50 | 113.38 | 10.276 | | | | |

**परिणाम विश्लेषण**

प्रस्तुत तालिका 1 से ज्ञात होता है कि छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान का मूल्य 112.74 है तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान का मूल्य 113.38 है। छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा के प्रमाणिक विचलन का मान 11.482 है तथा छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के प्रमाणिक विचलन का मान 10. 276 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से छात्र–छात्राओं का क्रान्तिक अनुपात –.294 है जिसका सार्थकता मूल्य .770 है 98 स्वतन्त्रता के अंश पर यह किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान के मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है। यह दर्शाता है कि छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि आज के दौर में बालक व बालिकाओं में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता है समाज व विद्यालय दोनों जगह बालक व बालिकाओं को जीवन में आगे बढ़ने के समान अवसर दिए जा रहे हैं।

**उद्देश्य–2**

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना –2**

कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

**तालिका : 2**

**कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन**

| समूह | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | स्वतंत्रता के अंश (df) | क्रान्तिक अनुपात | सार्थकता मूल्य | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विज्ञान वर्ग | 50 | 112.90 | 11.086 | 98 | –.147 | .884 | सार्थक नही |
| कला वर्ग | 50 | 113.22 | 10.708 | | | | |

**परिणाम विश्लेषण**

प्रस्तुत तालिका 1 से ज्ञात होता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान का मूल्य 112.90 है तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान का मूल्य 113.22 है। विज्ञान वर्ग की व्यावसायिक आकांक्षा के प्रमाणिक विचलन का मान 11.086 है तथा कला वर्ग की व्यावसायिक आकांक्षा के प्रमाणिक विचलन का मान 10.708 है।

सांख्यिकीय दृष्टिकोण से विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का क्रान्तिक अनुपात –.147 है जिसका सार्थकता मूल्य .884 है 98 स्वतन्त्रता के अंश पर यह किसी भी सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

कला व विज्ञान दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान के मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है। यह दर्शाता है कि कला व विज्ञान दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

आज के दौर में कला व विज्ञान दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों में व्यावसायिक आकांक्षा समान पाई जाती दोनों ही अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते है बस उनके व्यवसाय के चयन में अंतर है।

**निष्कर्ष**

1. छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा समान होती है।
2. कला व विज्ञान दोनों ही वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा समान होती है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *कपिल, एच.के. (2004). अनुसंधान विधियाँ (एकादश संस्करण). लखनऊ, वेदान्त पब्लिकेशन्स।*
2. *कुमार, आर० (2017) माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का उनके लिंग के सम्बन्ध में तुलनात्मक अध्ययन। इम्पीरियल जर्नल ऑफ इंटरडिशीप्लीनिरी रिसर्च, वो0–3, अंक–4।*
3. *कौर, जी० (2015) विद्यार्थियों में व्यावसायिक परिपक्वता का पारिवारिक वातावरण के सम्बन्ध में अध्ययन, आर्हात मल्टीडीशीप्लीनरी इंटरनेशनल एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, वो0– 4, अंक–1।*
4. *पटनायक, एम. बी. (2015) जंगल महल के विद्यालय में पढ़ने वाले किशोरों में लिंग, शैक्षिक प्रदर्शन व*

*जनसंख्यात्मक कारकों का व्यवसायिक आकांक्षा से सम्बन्ध का अध्ययन, एजुकेशन इंडिया जर्नल, वो0– 4, अंक–3।*

5. *पाठक, पी.डी. (1996). शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्त ( द्वितीय संस्करण ). आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।*
6. *बाकलीवाल, एम. (2011) माध्यमिक स्तर पर छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा व उनके माता–पिता की तत्सम्बन्धी आकाक्षा तथा व्यवसायिक आकाक्षा पुनर्निर्धारण का अध्ययन, भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष 31 अंक 4 पृठ 69*
7. *भार्गव, महेश चन्द. (1985). आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण (छठा संस्करण), हरप्रसाद भार्गव, आगरा ।*
8. *भटनागर, सुरेश (1975). शिक्षा मनोविज्ञान (वॉल्यूम– 3). मेरठ, लॉयल बुक डिपो।*
9. *भारद्वाज (2011), अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों की शैक्षिक अभिप्रेरणा, व्यवसायिक चुनाव तथा अधिगम शैली, शोध ग्रंथ, शिक्षा विभाग, जे0 वी0 जैन कालेज सहारनपुर, चौ0 च0 सिं0 विश्वविद्यालय, मेरठ।*
10. *भार्गव, महेश (1993). आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन (नौवॉ संस्करण), हरप्रसाद भार्गव।*
11. *राठौर, जगदीश सिंह (1990). समाज, मनोविज्ञान, विवेक प्रकाशन (प्रथम संस्करण). दिल्ली, जवाहर नगर।*
12. *वर्मा एवं उपाध्याय (1978). शिक्षा मनोविज्ञान।*
13. *सुखिया, एस.पी. (1948). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।*
14. *शर्मा,आर.ए .(2003). शिक्षा अनुसंधान (नवीन संस्करण). मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन।*
15. *त्रिपाठी, लालवचन (1992). आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, आगरा, हरप्रसाद भार्गव।*
16. *श्रीवास्तव, डी.एन. (1997). अनुसंधान विधियाँ (प्रथम संस्करण ), आगरा, साहित्य प्रकाशन।*